विचार बिन्दु

बुद्धि से विचार कर किए गए कर्म ही सफल होते हैं। –महाभारत

तरसेंगे हम पीने के पानी को

पानी.... जीवन की वह मूलभूत आवश्यकता है जिससे मानव, पशु, और सारा जीव-जंतु जुड़ा हुआ है। परंतु आज जब हम शुद्ध पानी की बात करते हैं, तो यह केवल एक भौतिक आवश्यकता नहीं रह जाती; यह हमारे सभ्य जीवन का दर्पण बन जाती है। जिस देश में नदियाँ बहती हैं और वर्षा होती है, वहां भी अनेक स्थानों पर लोग उस एक गिलास साफ पानी के लिए तरस रहे हैं। यह त्रासद स्थिति सिर्फ संसाधन की कमी नहीं, बल्कि नीतियों, प्रवर्तन, नेतृत्व, और समाज की प्राथमिकताओं की विफलता का संकेत है।

भारत विविधता की भूमि है। हिमालय की हिम-जलधाराएँ, समुद्रतटों की वर्षा-पवन प्रणालियाँ, पश्चिमी और पूर्वी नदी घाटियाँ सब मिलकर जल की एक समृद्ध तस्वीर पेश करते हैं। फिर भी स्नान के लिए पानी है, खेती के लिए पानी है, उद्योगों को पानी मिल जाता है, किंतु पीने के शुद्ध जल की उपलब्धता असमान और अक्सर अपर्याप्त है। शहरी और ग्रामीण दोनों ही क्षेत्र पीने के पानी की चुनौती से जूझ रहे हैं, पर कारण और प्रभाव भिन्न हैं। शहरी क्षेत्रों में स्वच्छता, पाइपलाइन नेटवर्क, रिचार्ज की कमी, और प्रदूषण बड़े कारण हैं; ठाामीण क्षेत्रों में पक्की इन्फ्रास्ट्रक्चर की कमी, भूजल का प्रदूषण, तथा जल-व्यवस्थापन की अपर्याप्त समझ मुख्य बाधाएँ हैं।

भूजल पर अत्यधिक निर्भरता ने समस्या को और जटिल बना दिया है। खेती में अनियंत्रित बोरवेल ड्रिलिंग, उद्योगों का अतिव्यापी उपयोग, और शहरी उपभोक्ता मांग ने पानी के स्तर को लगातार कम कर दिया है। परिणामस्वरूप नल सूखते हैं, हैंडपम्प गड़बड़ा जाते हैं, और जो मिल भी जाता है वो अक्सर प्रदूषित। प्रदूषण का स्त्रोत भी बहुस्तरीय है: औद्योगिक अपशिष्ट, कृषि रसायन (कीटनाशक और उर्वरक), घरेलू सीवेज, तथा ठोस अपशिष्ट जो जल स्त्रोतों में जा कर जल को जहरीला बना देते हैं। नदी और झीलें न केवल गंदी होती जा रही हैं, बल्कि हमारे औचित्यहीन उपयोग से कमजोर भी होती जा रही हैं।

जल संकट केवल भौतिक अभाव नहीं है; यह असमानता भी है। शहरों के धनी मोहल्लों में पानी की उपलब्धता बेहतर होती है जबकि झुग्गी-झोपड़ी और ग्रामीण ग्रामीण क्षेत्र अभी भी रोज पानी लाने के लिए लंबी दूरी तय करते हैं। यह असमानता स्वास्थ्य, शिक्षा और आर्थिक अवसरों पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है। पानी से जुड़ी बीमारियाँ डायरिया, स्कर्वी नहीं, बल्कि जलीय रोगों की पुनरावृत्ति बच्चों की मृत्युदर और काम करने की क्षमता को कम करती हैं। महिलाएँ और बालिकाएँ पानी लाने की जिम्मेदारी में समय खो देती हैं, जिससे उनके शिक्षा और सामाजिक भागीदारी प्रभावित होती है।

समस्या की जड़ में जननीति और कार्यान्वयन की कमी भी है। कई योजनाएँ और नियम तो बने हैं, पर उनका क्रियान्वयन कमजोर है। जलमंडल पर आधारित योजना, लोकभागीदारी, और संस्थागत सहकारिता की आवश्यकता है। स्थानीय समाजों को सशक्त करके, पानी का सुरक्षित प्रबंधन और संरक्षण सुनिश्चित किया जा सकता है। केवल नीतियाँ बनाना पर्याप्त नहीं; निगरानी, पारदर्शिता, और जवाबदेही उतनी ही जरूरी हैं ताकि योजना जमीन पर दिखे और असर दे।

हमारे पास समाधान भी हैं, और वे तकनीकी से लेकर पारंपरिक तक विस्तारित हैं। सबसे पहले जल संरक्षण और पुनः उपयोग को प्राथमिकता देनी होगी। वर्षा जल संचयन सरल और प्रभावी उपाय है, जिसे शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में अपनाया जा सकता है। छतों, सड़कों और सार्वजनिक स्थलों पर जल संचयन संरचनाएँ बनाकर वर्षा के पानी को रोक कर भूमिगत जलस्त्रोतों को रिचार्ज किया जा सकता है। साथ ही छोटे बाँध, तालाब, और अपशिष्ट जल के उपचार के बाद पुनः उपयोग, विशेषकर बागवानी और उद्योगों के लिए, पानी की मांग को कम कर देते हैं।

हमारे पास समाधान भी हैं, और वे तकनीकी से लेकर पारंपरिक तक विस्तारित हैं। सबसे पहले जल संरक्षण और पुनः उपयोग को प्राथमिकता देनी होगी। वर्षा जल संचयन सरल और प्रभावी उपाय है, जिसे शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में अपनाया जा सकता है। छतों, सड़कों और सार्वजनिक स्थलों पर जल संचयन संरचनाएँ बनाकर वर्षा के पानी को रोक कर भूमिगत जलस्त्रोतों को रिचार्ज किया जा सकता है। साथ ही छोटे बाँध, तालाब, और अपशिष्ट जल के उपचार के बाद पुनः उपयोग, विशेषकर बागवानी और उद्योगों के लिए, पानी की मांग को कम कर देते हैं।

कृषि में पानी की बचत के लिए ड्रिप इरिगेशन, सूखी फसल चक्र और जल कुशल फसलें अपनाने की आवश्यकता है। किसान को प्रशिक्षित कर, सस्ता और उपलब्ध तकनीक प्रदान करके बड़े पैमाने पर जल उपयोग को घटाया जा सकता है। सिंचाई की योजना बनाते समय स्थानीय जल-स्तर और मौसमी पैटर्न का ध्यान रखना होगा, ताकि जमीन की उर्वरता और जल-स्तर दोनों सुरक्षित रहें।

नियमन और प्रदूषण नियंत्रण का कठोर पालन जरूरी है। उद्योगों और कस्बों से निकलने वाले सीवेज का उपचार अनिवार्य बनाना होगा। नदी घाटियों और जलाशयों के किनारों पर अतिक्रमण रोका जाए, और गंदगी ढेर करने वाले स्थानों पर निगरानी बढ़ाई जाए। सार्वजनिक स्वास्थ्य और पर्यावरण सुरक्षा के लिए जल गुणवत्ता मानक सख्त किए जाएँ और उनका पालन सुनिश्चित करने के लिए स्वच्छता जांच तंत्र को प्रभावी बनाना होगा।

जल प्रशासन में लोगों की भागीदारी अहम है। जल उपयोग, संरक्षण और वितरण से जुड़े निर्णयों में स्थानीय समुदायों को शामिल करना पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक विज्ञान का समन्वय कर सकता है। पंचायत स्तर पर जल समितियाँ काम कर सकती हैं जो पानी के उपयोग के नियम बनाएँ, रिचार्ज परियोजनाओं पर निगरानी रखें और हितधारकों के बीच समन्वय स्थापित करें। शिक्षा और जागरूकता कार्यक्रमों से लोग सरल व्यवहारिक बदलाव जैसे नल बंद रखना, गंदा पानी न बहाना, और घरेलू उपचार अपनाना करने के लिए प्रेरित होंगे।

प्रौद्योगिकी भी इस संकट में सहायक हो सकती है। सस्ती जल परीक्षण किटें, स्मार्ट मीटरिंग, और डेटा-आधारित जल प्रबंधन से आपूर्ति और मांग का संतुलन बनाया जा सकता है। उपग्रह और जियो डेटा भूजल स्तर की निगरानी में मदद करते हैं और समय पर हस्तक्षेप संभव बनाते हैं। पर तकनीक तभी फलदायी होगी जब वह स्थानीय संदर्भ में लागू हो और समुदाय के हाथ में सेवा की तरह पहुँचे, न कि महँगी और जर्जर परियोजनाओं की तरह।

अर्थव्यवस्था भी एक कारक है। पानी को सस्ती और असीम संसाधन मानकर उपयोग करना महँगा पड़ रहा है। पानी की असल कीमत और उसकी बाह्य लागतों (जैसे स्वास्थ्य, पर्यावरण, पुनर्स्थापन) को समझ कर नीति निर्माताओं को पानी के प्रबन्धन के आर्थिक मॉडल बनाए जाने चाहिए। टैक्स नीति, सब्सिडी का निर्धारण और पानी के उचित मूल्य निर्धारण से गैर-जरूरी उपयोग को रोका जा सकता है, किन्तु इसके साथ सामाजिक सुरक्षा की भी व्यवस्था आवश्यक है ताकि गरीबों की आजीविका प्रभावित न हो।

हमारे सांस्कृतिक और आध्यात्मिक मूल भी पानी की रक्षा के लिए प्रेरणा दे सकते हैं। इतिहास में जल-पूजन, तालाब, और पवित्र नदियों की परंपरा रही है जो केवल जल का धार्मिक महत्व ही नहीं, सामाजिक साझा करने का बोध भी देती है। इस संवेदनशीलता को फिर से जगाकर और इसे आधुनिक सबक के साथ जोड़कर हम पानी के प्रति सम्मान और संरक्षण का भाव बढ़ा सकते हैं।

यदि हम आज भी देर करें तो आने वाली पीढ़ियाँ वही सवाल करेंगी जो हमने पूछा: हमने क्या किया? क्या हमने अपने नदियों, तालाबों और भूमिगत जल को बचाया? जवाब तभी सकारात्मक होगा जब नीति, तकनीक, समुदाय और संस्कृति एक साथ काम करें। पानी के हर एक बूंद का महत्त्व समझें; नल से बहती पानी की हर बूँद की कीमत जानें; वर्षा को रोकें नहीं, सम्हालें; और अपने बच्चों को पानी का सम्मान सिखाएं। तभी हम उस दिन से बच पाएँगे जब सचमुच हर गली, हर घर में "तरसेंगे हम पीने के पानी को" केवल एक कड़वी याद न बन कर एक चेतावनी ही बनी रहे।

–अतिथि संपादक
अविनाश जोशी,
वरिष्ठ पत्रकार एवं कॉरपोरेट सलाहकार

विश्व पर्यावरण दिवस विशेष (5 जून)......

जयपुर: छह सौ बावड़ियों का विलाप

भू-जल के अंधाधुंध दोहन, कंक्रीट विस्तार और नीतिगत लापरवाही ने पारंपरिक जल संरचनाओं को किया खत्म

मणिमाला शर्मा

एक समय जल-संरक्षण की मिसाल रहा जयपुर आज अति-दोहित भू-जल, प्रदूषण और अतिक्रमण के बोझ तले कराह रहा है। सवाल यह है कि क्या शहर अपनी खोई हुई जल-स्मृति को वापस पा सकेगा

हम एक ऐसे आत्मघाती और संवेदनहीन दौर में जी रहे हैं जहाँ प्यास से तड़पते गले और सूखती नदियां भी हमारी सोई हुई चेतना को जगाने में नाकाम साबित हो रही हैं। हर साल पांच जून को पर्यावरण दिवस के नाम पर रस्मी तौर पर कुछ सरकारी पौधे रोप देना, वातानुकूलित कमरों में बैठकर जल संकट पर चिंता जताना और प्रकृति-प्रेम का ढोंग रचना हमारी आदत बन चुकी है। लेकिन इस पाखंड की ओट में छिपा डरावना सच यह है कि जब हम मंचों से पानी बचाने की खोखली दुहाई दे रहे होते हैं, तब तक राजधानी जयपुर की एक बड़ी आबादी पानी की एक-एक बूंद के लिए सड़कों पर टैंकरों के पीछे भागने को अभिशप्त हो चुकी होती है। शहर अब पूरी तरह कंक्रीट के जंगल में तब्दील होने के कगार पर पहुँच चुका है। पहले चारों ओर जहाँ हरियाली दिखाई देती थी वहीं अब बहुमंजिली इमारतों ने हरियाली की जगह ले ली है। हरियाली अब बस बालकनी और छतों पर तखे हुए गमलों में सिमट कर रह गई है। इसका मुख्य संकट जल संकट के रूप में सामने आया है।

जयपुर का जल संकट अब कोई दूर की कौड़ी या भविष्य की चेतावनी नहीं है; यह हमारे वर्तमान का वह जलता हुआ यथार्थ है जो हमारी चौखट तक आकर हमें निगलने को तैयार खड़ा है। इस संकट का सबसे खौफनाक चेहरा देखना हो, तो हमें जयपुर की मरती हुई कोख को समझना होगा। केंद्रीय भू-जल बोर्ड और राज्य सरकार की संयुक्त गतिशील भू-जल संसाधन आकलन की ताज़ा रिपोर्ट किसी भी संवेदनशील समाज को हिलाकर रख देने के लिए काफी है।

इस रिपोर्ट के चौंकाने वाले आधिकारिक आंकड़े बताते हैं कि जयपुर जिला पूरी तरह अति-दोहित यानी क्षमता से अधिक शोषित की श्रेणी में आ चुका है। इस रिपोर्ट के चौंकाने वाले आधिकारिक आंकड़े बताते हैं कि राजस्थान के कुल तीन सौ दो भू-जल क्षेत्रों में से सत्तर प्रतिशत से अधिक यानी दो सौ चौदह क्षेत्र अति-दोहित यानी क्षमता से अधिक शोषित की श्रेणी में आ चुके हैं। जयपुर शहर के भीतर और बाहरी औद्योगिक क्षेत्रों में पानी का दोहन इसकी प्राकृतिक पुनर्भरण क्षमता से कई गुना ज्यादा है। हम पाताल से लगातार पानी खींच रहे हैं, जिसे वैज्ञानिक भाषा में भू-जल का क्रूर खनन कहा जाता है। राज्य में भू-जल निकालने की रफ्तार इसके रीचार्ज होने की रफ्तार से 149 फीसदी अधिक है। यानी हम आने वाली पीढ़ियों के हिस्से का पानी आज ही निचोड़ रहे हैं। हम केवल अपना आज नहीं उजाड़ रहे, बल्कि अपनी आने वाली पीढ़ियों के हिस्से का जीवन भी आज ही खींचकर ख़त्म कर रहे हैं।

इस भयानक तबाही का सबसे बड़ा कारण यह है कि हमने आधुनिकता के नशे में चूर होकर जयपुर की सदियों पुरानी जल-प्रणालियों की बेरहमी से हत्या कर दी।

महाराजा सवाई जयसिंह और उनके बाद के दूरदर्शी शासकों ने जब इस शहर को बसाया था, तो इसके जल प्रबंधन के लिए एक अभूतपूर्व ढांचा तैयार किया था। इतिहासकारों के अनुसार, जयपुर के परकोटे और उसके आस-पास पानी सहेजने के लिए छह सौ से अधिक कुओं और बेजोड़ बावडियों का एक ऐतिहासिक जाल बिछाया गया था। लेकिन तथाकथित स्मार्ट और आधुनिक बनने की होड़ में हमने क्या किया? हमने उन छह सौ ऐतिहासिक जल-स्त्रोतों को ज़मीदोज़ कर दिया। आज हालत यह हैं कि उन छ सौ जल स्त्रोतों में से आज गिनती की बीस बावडियां भी ठीक से सांस नहीं ले पा रही हैं। पन्ना मीणा का कुंड, सागर बावड़ी या चीला बावड़ी जैसी चंद बची हुई धरोहरें भी आज पानी सहेजने के बजाय सिर्फ पर्यटन का केंद्र बनकर रह गई हैं। जबकि बाकी की सैकड़ों बावडियों को हमने कचराघर बना दिया या उन पर बहुमंजिला इमारतें खड़ी कर दीं। जब पूरे शहर की जमीन पर कंक्रीट और डामर की अभेद्य परत बिछ जाएगी, तो मानसून का पानी धरती के भीतर जाएगा कैसे?

द्रव्यवती नदी को संवारने के नाम पर उसे कंक्रीट के नाले में बदल दिया गया, और रामगढ़ बांध से लेकर आमेर की झीलों के भराव क्षेत्र पर भू-माफियाओं ने नेताओं और नौकरशाहों की साठगांठ से कब्जा कर लिया। यही वजह है कि राष्ट्रीय हरित अधिकरण को राज्य के लचर और ढीले भू-जल नियमों पर सख्त हथौड़ा चलाना पड़ा और उनके दिशा-निर्देशों को खारिज करना पड़ा। आज स्थिति यह है कि मानसून की थोड़ी सी बारिश भी जयपुर की सड़कों को दरिया बना देती है क्योंकि पानी के पास जमीन के भीतर जाने का कोई रास्ता ही नहीं बचा है।हैरानी और क्षोभ की बात यह है कि इस पूरे जल संकट की बहस को चालाकी से केवल आम आदमी की व्यक्तिगत जिम्मेदारी बताकर छोड़ दिया जाता है। परकोटे के नागरिक से कहा जाता है कि वह नहाते समय बाल्टी का इस्तेमाल करे या ब्रश करते समय नल बंद रखे;जो कि नागरिक चेतना के स्तर पर बिल्कुल सही और जरूरी भी है।

लेकिन जयपुर के आसपास की उन विशाल व्यावसायिक और औद्योगिक इकाइयों का क्या, जो हर दिन जो एक लीटर शीतल पेय, एक कपड़ा या एक टन कागज बनाने के लिए जमीन के सीने से लाखों लीटर पानी डकार जाती हैं? उद्योगों द्वारा फैलाए जा रहे इस जानलेवा जल-निशान पर नीति-निर्माता हमेशा रहस्यमयी चुप्पी साध लेते हैं। वार्षिक भू-जल गुणवत्ता रिपोर्ट के डरावने निष्कर्ष बताते हैं कि जयपुर के कई शहरी और औद्योगिक इलाकों का भू-जल अब सिर्फ खत्म नहीं हो रहा, बल्कि वह फ्लोराइड और नाइट्रेट के अत्यधिक रिसाव के कारण जहरीला और पीने के लिए असुरक्षित हो चुका है।जयपुर का जल संरक्षण केवल पेड़ के नीचे बैठकर आंसू बहाने या हर साल पांच जून को एक औपचारिक कार्यशाला आयोजित करने से नहीं होगा। इसके लिए कड़े कानूनी और नीतिगत फैसलों की जरूरत है।

नगर निगम के साथ ही राज्य सरकार को भी अब कड़े कदम उठाने होंगे ताकि पर्यावरण को नुकसान न पहुँचे। भवन निर्माण उप-नियमों के तहत जयपुर की हर नई और पुरानी व्यावसायिक और आवासीय इमारत में वर्षा जल संचयन को केवल कागजी नक्शों में नहीं, बल्कि जमीन पर अनिवार्य किया जाना चाहिए और इसका उल्लंघन करने वालों पर सख्त कानूनी कार्रवाई होनी चाहिए। सरकार को अपने भारी-भरकम बजट का एक बड़ा हिस्सा जयपुर की परित्यक्त बावडियों और जोहड़ों की गाद निकालने और उन्हें पुनर्जीवित करने में लगाना चाहिए। इतिहास गवाह है कि दुनिया की बड़ी-बड़ी और महान सभ्यताएं सोने या हथियारों की कमी से नहीं, बल्कि पानी की कमी के कारण नेस्तनाबूद हुईं। यदि हम आज भी इस भीषण हकीकत को देखकर अपनी आंखें मूंद रहे हैं, तो यकीन मानिए, अगला विश्व युद्ध सीमाओं के लिए नहीं, बल्कि पानी की आखिरी बोतल के लिए लड़ा जाएगा।

कंक्रीट के आलीशान मकान, चमचमाती गाड़ियां और तिजोरियों में बंद पैसा आपकी प्यास नहीं बुझा पाएंगे। प्रकृति हमें अपनी गलतियां सुधारने का आखिरी और अंतिम मौका दे रही है। यदि इस पर्यावरण दिवस पर भी हमारी नीति और नियत नहीं बदली, तो जयपुर का वैभव सिर्फ इतिहास की किताबों के पन्नों पर बचेगा और आने वाली पीढ़ी हमारी इस आपराधिक लापरवाही के लिए हमें कभी माफ नहीं करेगी।

–मणिमाला शर्मा
वरिष्ठ पत्रकार और विश्लेषक

"कॉकरोच जनता पार्टी"......डरना जरूरी नहीं है

राम निवास बैरवा

भारतीय उप महाद्वीप में कई देश हो सकते हैं, परन्तु सभी की आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक समस्यायें लगभग एक जैसी ही हैं। इस उप-महाद्वीप के आंदोलन भी लगभग एक समान हैं। श्रीलंका में और बाद में बांग्लादेश में युवाओं का कथित आंदोलन जहां पुरानी राजनीतिक पार्टियों के हाथों चला गया, वहीं नेपाल में एक नई पार्टी बनाकर सत्ता प्राप्त की, लेकिन कुछ मूलभूत समस्याओं के सुधारवादी उपायों के अलावा नेपाल में और कोई खास परिवर्तन नहीं किए जा सके।

भारत में भी उन्हीं समस्याओं को लेकर आम आदमी पार्टी बनी, और दिल्ली में सरकार बनाकर केंद्र में बैठी भारतीय जनता पार्टी की सरकार की आँख की किरकिरी बनी। परिणाम किसी से छुपा नहीं है। वहां के मुख्यमंत्री सहित कई मंत्रियों को जेल भेजा गया, बिना किसी प्रमाणित अपराध के। इसी से सीख लेकर तमिलनाडु में परम्परागत द्रमुक और अन्नाद्रमुक की रस्साकस्सी के बीच भाजपा ने फिल्म अभिनेता विजय थलपति (सी. जोसेफ विजय) को आगे करके उसकी टीवीके (Tamilaga Vettri Kazhagam TVK) नाम की पार्टी के जरिए तमिलनाडु की मजबूत पार्टियों को समाप्त करने की कोशिश की और सफल रही।

इसी बीच एक मामूली सी बात को लेकर भारत के मुख्य न्यायाधीश सूर्यकान्त ने व्यक्तिगत रूप से उलाहना देने वाले शब्द 'कॉकरोच' का इस्तेमाल करके पूरे बेरोजगार युवाओं को 'कॉकरोच' और 'परजीवी' कहकर उसे एक सामूहिक गाली में बदल दिया। "आम आदमी पार्टी" के एक पुराने कार्यकर्त्ता अभिजीत दीपके ने मुख्य न्यायाधीश द्वारा दी गई उस गाली को एक व्यंग के रूप में "कॉकरोच जनता पार्टी" के नाम से सोशल मीडिया पर प्रसारित कर दिया। देखते ही देखते करोड़ों लोगों ने सोशल मीडिया पर समर्थन देकर उसे एक राजनीतिक पार्टी में बदल दिया। दीपके अरविंद केजरीवाल की तरह आम सभाएं नहींकर सकते थे, लेकिन शीघ्रता से प्रचारित-प्रसारित होने वाले सोशल मीडिया के माध्यम से करोड़ों लोगों के बीच पहुँच बना ली। जैसा कि हमेशा ही होता है, सरकार उस व्यक्ति या उन लोगों को व्यक्तिगत निशाना बनाना शुरू कर दिया है- जैसे कि युवा-बेरोजगार इस देश के दुश्मन हों और पाकिस्तान में बैठकर भारत सरकार के खिलाफ कोई राजनीतिक अभियान चला रहे हों।

"युवा कौन होते हैं और उनका भविष्य क्या है?"

दरअसल युवक आबादी का वह हिस्सा होते हैं जिनको देश के भावी कर्णधार बताकर उनकी झूठी तारीफ की जाती है। पर वे सत्ताधारी लोगों और उनकी पार्टियों की नजरों में वही होते हैं जैसा सत्ता के एक प्रमुख अंग, मुख्य न्यायाधीश ने उन्हें संबोधित किया है, 'कॉकरोच', 'परजीवी'।

वे परजीवी, कॉकरोच क्यों हैं?

कृषि अनगिनत बेरोजगारों को अपने में समाहित कर लेती ह उन्हें भूखा नहीं मरने देती है। परन्तु आधुनिक और मॉडर्न शिक्षा पद्धति बेरोजगार पैदा करने की फैक्ट्रियां बनी हुई हैं। वे युवा हैं, बेरोजगार हैं, परंतु वे किसान नहीं हैं, वे मजदूर नहीं हैं, उनकी राष्ट्रीय उत्पादन में कोई भागीदारी नहीं है, उनकी राष्ट्रीय उत्पादन में कोई भूमिका नहीं होती है, इसलिए वे परजीवी हैं, इसलिए वे कॉकरोच हैं। जब वे स्कूल, कॉलेजों नामक फैक्ट्रियों से बाहर निकलते हैं तो वे न तो युवा होते हैं न ही देश के कर्णधार। वे सिर्फ बेरोजगार होते हैं जिन्हें रोजगार की तलाश है। और रोजगार देने वालों के लिए वे हिन्दू होते हैं, रोजगार देने वालों के लिए वे मुसलमान होते हैं, रोजगार देने वालों के लिए वे ईसाई और आदिवासी होते हैं। इससे भी आगे बढ़कर वे अनुसूचित जाति के होते हैं, वे अनुसूचित जनजाति के होते हैं, रोजगार देने वालों के लिए वे बनिया, गुप्ता, माहेश्वरी होते हैं। कहीं वे यादव होते हैं तो कहीं चमार होते हैं। लेकिन रोजगार देने वालों के लिए वे 'कर्मचारी' नहीं होते है, रोजगार देने वालों के लिए वे मजदूर नहीं होते हैं। वे सिर्फ नाकरी मांगने वाले होते हैं। इसीलिए वे एक वेकेंसी के पीछे सैंकड़ों हजारों की संख्या में ऐसे दौड़ते है .... ऐसे दौड़ते हैं ... जैसे कॉकरोच।

जब युवाओं की, देश के भावी कर्णधारों की कोई पहचान ही नहीं है तो वे सामन्तवाद के ताने-बाने से ही अपनी पहचान बनाते हैं। यहीं पहचान उन्हें कॉकरोच बनाती है, यही पहचान उन्हें परजीवी बनाती हैं, जिन्हें परजीवियों की सत्ता अपने मनमुताबिक ढ़ालकर उनका इस्तेमाल करती है। सरकार की नजरों में वे बेशक बेरोजगार हो परन्तु वे दया के पात्र होते हैं, परजीवी हैं। शुक्र है न्यायाधीश महोदय ने उनको कॉकरोच, परजीवी की तो पहचान दी; अन्यथा कॉलेजियम के अनुसार तो वे अदालत के अदब तक नहीं जानते।

आखिर वे अदाब कहां से सीखंगे, जब रोजगार देने के नाम पर ली जाने वाली परीक्षाएं एक मजाक बन कर रह जाती हैं। वैसे तो हर साल, कई वर्षों से परीक्षाओं के पेपर समय से पहले ही लीक कर दिये जाते हैं और नौकरियों के लिए चयन प्रक्रियाएं अधर में लटका दी जाती है। इसी वर्ष, 2026 में नीट-यूजी की परीक्षाओं के पेपर लीक करवा के लाखों डॉक्टर- इंजिनियर बनने का सपना देखने वाले बेरोजगारों को कॉकरोच – परजीवी बनाने का ही तो तरीका है। ... और, ग्लोबलाइजेशन की कई शर्तों में से एक शर्त यही तो है कि प्रशासनिक खर्चों में 30 प्रतिशत की कमी करना होगा जिनमें नौकरियों को समाप्त करना भी शामिल है। नौकरियां कैसे खतम हों, खाली पदों का लालच दो पर उन्हें पूरा नहीं करो। नौकरियों के इंतजार में युवा ओवरएज होकर राजनीतिक दलों और माफियाओं के लिए काम करने वाले बनने को मजबूर होंगे ही।

सी.बी.एस.ई. के एक लडके वेदांत ने जब पूरी सरकार और सी.बी.एस.ई. के परीक्षा तंत्र और नाकामियों को उजागर किया तो पूरी सरकार, उसका मीडिया, पूरा सी.बी.एस.ई तंत्र उस बच्चे को गलतसाबित करने की कोशिशें की और उनका ब्रह्मास्त्र भी चला कर उसे पाकिस्तानी कह दिया। युवाओं में सरकार को गलत साबित करने की पूरी क्षमता भी है, परंतु सरकारी तंत्र के सामने बेबस होर रह जाते हैं। जब वे सरकारी तंत्र को गलत साबित हैं तो वे महज युवा नहीं होते हैं, बल्कि वे देश की चिंता कर रहे होते हैं, वे एक इमानदार और जिम्मेदार सरकारी तंत्र की चाहत रखते हैं। उनकी इसी चाहत को खतम करने के लिए, उनकी इसी चाहत को जनता की, मजदूरों की, किसानों की अग्रिम वैचारिक पंक्ति नहीं बनने देने के लिए ही उन्हें कॉकरोच और परजीवी की दिया जाता है।

ऐसे में राजनीतिक पार्टियां उन्हें हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, आदिवासी, भंगी, चमार, यादव, जाट, ब्राह्मण, बनिया बनाकर उनका इस्तेमाल करती हैं। राजनीतिक पार्टियों के इस्तेमाल किए जाने के लिए पहली शर्त उन युवाओं का बेरोजगार होना जरूरी है। दूसरी शर्त, उनकी क्षमता पर निर्भर करता है कि वे संपत्तियों कितनी तोड़-फोड़ कर सकते हैं, कितना हंगामा कर सकते हैं, कितनी भीड़ जुटा सकते हैं और कितना पैसा इकट्ठा करके पार्टी फंड के नाम से बडे.नेताओं को दे सकते हैं और अपनी खुद की आर्थिक स्थिति को भी अच्छी बनाकर अपनी ही जाति, अपने ही धर्म में सम्मानित व्यक्ति बनकर वार्ड मेंबर, सरपंच, एम.एल.ए, एम.पी. यहां तक कि मंत्री भी बन सकता है और अपने विवेक को अपनी बुद्धि को मेजें थपथपाने और हाथ खड़ा करने में प्रकट करता है।

लेकिन किसी युवा को न तो मजदूर बनने दिया जाता है और न ही किसान। वे अस्थाई मजदूर बन सकते हैं। उनके जीवन में सामाजिक स्थायित्व नहीं आ पाता। इसी कारण वे किसी भी सामाजिक, राजनीतिक या आर्थिक परिवर्तन के संवाहक नहीं बन पा रहे हैं।

युवाओं आंदोलन क्रांति में नहीं बदलते हैं।मजदूरों के, किसानों के आंदोलन अंततः राजनीतिक क्रांति में बदल जाते हैं, जिनका पहला काम अर्थव्यवस्था को बदलना होता है। फ्रांस का 1793 का किसान आंदोलन "रोटी मांगने वाले किसान केक क्यों नहीं खाते" जैसे अबोध बच्ची के कथन को कटाक्ष मानकर फ्रांस के पूरे राजपरिवार को खतम कर चुका था। "कॉकरोच-परजीवी" का कथन अबोध बच्ची जैसा कथन नहीं था, और ना ही मजदूरों-किसानों के लिए था बल्कि एक पीढ़ी, युवा पीढ़ी पर पूरे सरकारी तंत्र द्वारा किया गया कटाक्ष था।

संविधान के अन्तर्गत निर्मित सरकार और उसके विभिन्न अंगों का ढांचा दरअसल बच्चों और युवाओं का संरक्षक होना चाहिए। लेकिन कोई भी सरकारी तामझाम और संवैधानिक प्राधिकारी उन युवाओं का संरक्षक नहीं बन कर उन्हें तिरस्कृत करने में लगा हैं। पीढ़ियों के सामाजिक अन्तर को GEN-Z (जनरेशन-जेड) कहकर उनकी ब्रांडिंग कर रहे हैं जबकि भारत के युवाZEN-G (Zen-Generation) यानि कि शांत और गम्भीर पीढी (जेन-जनरेशन) बनी हुई है और संवैधानिक व्यवस्था से अपनी अपेक्षाएं बनाए रखे हुए हैं। वे अभी आखरी पीढ़ी (Gen-Z) नहीं बनना चाहती, यह बात सरकारों और संवैधानिक पदाधिकारियों को समझ लेनी चाहिए।

नीट पेपर लीक मामले की सुनवाई के दौरान जस्टिस पी.एस. नरसिम्हा और जस्टिस आलोक आराघे की पीठ ने टिप्पणि की कि "क्षमता किसी व्यक्ति में नहीं, बल्कि संस्था में होती है। आपको इसी के लिए तैयारी करनी है।" फिर 'कॉकरोच' और 'परजीवी' कहने वाले जस्टिस सूर्यकांत एक व्यक्ति थे या संस्था?

-राम निवास बैरवा,
पूर्व क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

शुक्रवार 5 जून, 2026

द्वितीय ज्येष्ठ मास (अधिक), कृष्ण पक्ष, पंचमी तिथि, शुक्रवार, विक्रम संवत 2083, श्रवण नक्षत्र शनिवार प्रातः 6:03 तक, ब्रह्म योग प्रातः 9:42 तक, कौलव करण दिन 12:26 तक, चन्द्रमा आज मकर राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृष, चन्द्रमा-मकर, मंगल-मेष, बुध-मिथुन, गुरू-कर्क, शुक्र-मिथुन, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज सर्वार्थ सिद्धि योग और कुमार योग सूर्योदय से सम्पूर्ण दिन-रात है। आज विश्व पर्यावरण दिवस है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर सूर्योदय से 7:19 तक, लाभ अमृत 7:19 से 10:43 तक, शुभ 12:25 से 2:07 तक, चर 5:32 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 10:30 से 12:00 तक। सूर्योदय 5:37, सूर्यास्त 7:14

मेष

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है।

वृष

नवीन कार्यों के संबंध सकारात्मक संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी।

मिथुन

परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क

व्यक्तिगत परेशानियां दूर होने लगेगी। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

सिंह

आज आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। आपसी ईर्ष्या-वैमनस्यता के कारण परेशानी हो सकती है। व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा।

कन्या

घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला

व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद दूर होने लगेंगे।

वृश्चिक

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

धनु

घर-परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है। आज मन में असंतोष बना रहेगा।

कुंभ

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा।

मीन

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।